आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 09/06/2023; Accepted: 14/06/2023; Published: 24/06/2023

दलित विमर्श

[1]लेखिका, [2]मोक्षित जैन
(बी सी ए) 4 सेम
सुराना कॉलेज
नंबर 16, साउथेंड रोड बैंगलोर-560004

[1]लेखिका, [2]मोक्षित जैन, **दलित विमर्श** ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023, (292-297)

दलित विमर्श का परिचय:

दलित विमर्श एक ऐसा विषय है जो भारतीय समाज के लिए अहम है। यह उन सभी मुद्दों को संबोधित करता है जो दलित समुदाय के सामने हैं। दलित विमर्श की शुरुआत भारत में भारतीय संविधान के उत्थान के समय हुई थी। भारतीय संविधान ने दलितों को समान अधिकारों की गारंटी दी थी जो समाज में समानता को प्राप्त करने में मदद करते हैं।दलित विमर्श एक व्यापक शब्द है जो दलितों की संघर्षों, समस्याओं और उनके सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर विचार और विमर्श को संकेतित करता है। दलित शब्द का अर्थ होता है "अछूत" या "स्पष्ट रूप से वंचित"। यह शब्द भारतीय समाज में निर्जनता, उपेक्षा और असमानता के अनुभवों को जताने के लिए प्रयुक्त होता है।दलित विमर्श की व्यापकता इसे एक मानवीय और सामाजिक मुद्दा बनाती है, जिसमें दलित समाज के सदस्यों के अधिकारों, समानता और गरिमा पर विचार किया जाता है। यह विमर्श उनकी संघर्षों को उजागर करता है और सामाजिक सुधार के लिए उच्च स्तरीय विचारधारा और नीतियों के विकास में मदद करता है।

दलित विमर्श के माध्यम से, लोग दलितों के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, और न्यायिक मुद्दों को समझने और समर्थन करने की कोशिश करते हैं। इससे लोगों की जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ती है और समाज में सुधार के लिए नई दिशाओ

दलित विमर्श एक ऐसी आंदोलनबद्ध चर्चा है जो भारत में दलितों की समाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करती है। यह आंदोलन दलितों के अधिकारों, समानता और न्याय की मांग को उठाने का प्रयास करता है। दलित विमर्श के पक्षधर दलित सामाजिक सुधार और न्याय के लिए संघर्ष करते हैं।

दलित शब्द संस्कृत शब्द 'दलित' से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है 'तोड़नेवाला' या 'पत्थर तोड़नेवाला'। यह शब्द इसलिए प्रयोग किया जाता है क्योंकि पूर्वाग्रह, भेदभाव और विवेकशीलता के कारण इन्हें उच्च वर्णीय समाज के द्वारा अपमानित, छेड़छाड़ किया जाता है।

दलित विमर्श के माध्यम से, दलित संगठन और दलित विचारक अपने अधिकारों की रक्षा, दलित समाज के उन्नयन के लिए लड़ाई और सामाजिक परिवर्तन की मांग को आगे बढ़ाते हैं। इसका उद्देश्य दलितों को अपनी समाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशा में सशक्त बनाना ह!दलित विमर्श एक महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन है जो भारतीय समाज में दलित समुदाय की समस्याओं को उजागर करता है और उनके लिए समानता, न्याय और अवसर की मांग करता है। यह आंदोलन दलितों के अधिकारों को प्रतिष्ठित करने, उन्हें समान समाज में स्थान देने और उनकी संकटमय स्थिति में सुधार करने का प्रयास करता है। दलित विमर्श के माध्यम से दलित समुदाय के नेताओं, शिक्षायेंद्रों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भूमिका निभाई है। इसके अलावा, विभिन्न विचारधाराओं और विमर्श के माध्यम से दलित समाज की उन्नति और सामरिक जागरूकता को बढ़ावा दिया गया है।

दलित विमर्श का महत्व उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत विकास के संदर्भ में विशेष रूप से बढ़ गया है। दलित समुदाय के सदस्यों को स्वतंत्र और गरिमामय जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए, जो उन्हें स्वतंत्रता, समानता और आत्मसम्मान का आनंद देता है।दलित समुदाय को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे समाज की निचली पायर्वरण में होते हैं जिससे उन्हें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएं, आवास, जल और साफ-सफाई जैसी सुविधाओं से वंचित रहते हैं। दलित समुदाय को उनके स्थान पर रखने वाले सामाजिक और आर्थिक उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। उन्हें न सिर्फ शिक्षा के माध्यम से जाने जाने वाले समाज की धार्मिक मान्यताओं से भी लड़ना पड़ता है।दलित विमर्श या दलित आंदोलन के कारण भारत में सिद्धांत और संस्थागत भेदभाव के लिए दलित समुदाय के साथ उनकी मार्गीकरण और अत्याचार होने की वजह से हो रहा है। दलितों को कई वर्षों से विभिन्न प्रकार के भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ा है। इस आंदोलन के कारणों को समझने के लिए, हमें भारतीय समाज में मौजूदा सिद्धांत और संस्थागत भेदभाव के संदर्भ में देखना होगा।

भारतीय समाज में दलित विमर्श का प्रमुख कारण है घनिष्ठ जाति आधारित भेदभाव का अस्तित्व। दलितों को "अछूत" कहा जाता है और वे अक्सर सामाजिक अलगाव, अपमान और हिंसा का शिकार होते हैं। यह भेदभाव दलित समुदाय को बुनियादी मानवाधिकार और अवसरों से वंचित करने की वजह बनता है। अपने अधिकारों की संरक्षा के लिए कई विधि-व्यवस्थाएं होने के बावजूद, दलित अभी भी जीवन के विभिन्न पहलुओं में भेदभाव का सामना करते हैं।दलित विमर्श के पीछे कुछ कारण हो सकते हैं। ये कारण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हो सकते हैं।

सामाजिक कारण:

दलितों की जाति अत्यंत पिछड़ी होती है और उन्हें समाज की अधिकांश वर्गों से अलग समझा जाता है। इससे उन्हें समाज में भाग लेने में कठिनाई होती है और वे अनुचित रूप से विभिन्न तरह से उन्हें अलग-थलग कर दिया जाता है।

आर्थिक कारण:

दलितों की आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर होती है। उन्हें उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और अधिकारों तक पहुंचने में कठिनाई होती है। उन्हें काम के लिए अधिक चाहिए जाता है और उन्हें कम वेतन दिया जाता है। इससे वे अन्य वर्गों से तुलना में आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं।

राजनीतिक कारण:

दलितों के लिए राजनीतिक संरचनाएं अन्य वर्गों की तुलना में अधिक असंवेदनशील होती हैं। उन्हें उच्च पदों और सरकारी नौकरियों में शामिल होने में कठिनाई होती है।

दलित भारत के अल्पसंख्यक समुदायों में से एक हैं। वे भारत के विभिन्न हिस्सों में पाए जाते हैं और उनमें से कुछ राज्य हैं जहां दलितों की संख्या ज्यादा होती है, जैसे कि उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और केरल। दलित जातियों को पहले अनुच्छेद १५० में स्थानांतरित किया गया था जो कि भारत का संविधान है।

"दलित" शब्द का उल्लेख हिंदी में पहली बार समाज सुधारक ज्योतिबा फुले ने 19वीं सदी में किया था। इस शब्द का अर्थ होता है "अत्याचारित" या "टूटा-फूटा" और इसे उन व्यक्तियों को बताने के लिए प्रयोग किया जाता था जो हिंदू जाति व्यवस्था के निचले पायदान पर थे और उन्हें भारी भरकम भेदभाव और सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ता था।

भारत में जाति व्यवस्था का एक लम्बा इतिहास है और यह हिंदू धर्म में गहरी जड़ों से जुड़ा हुआ है, जिसमें ब्राह्मण (ब्राह्मण), क्षत्रिय (योद्धा), वैश्य (व्यापारी) और शूद्र (सेवक) चार मुख्य जातियां एक कड़ी जाति वर्ग में होती हैं। उन लोगों को, जो जाति व्यवस्था के बाहर माने जाते थे, जैसे दलित, कई सदियों से भारी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अत्याचार का सामना करना पड़ता रहा है।

दलित विमर्श का पहला आंदोलन "अन्त्योदय" नामक संगठन था, जो 1940 ईसी में द्र. बी.आर. अंबेडकर द्वारा प्रारंभ किया गया था। यह संगठन अन्त्योदय की वस्तुस्थिति के विषय में जानकारी प्रदान करता था और असहाय लोगों के लिए उन्नयन के प्रयासों को संबोधित करता था। इसका उद्देश्य था दलितों को उनके समाज में सम्मान प्राप्त करना, सामाजिक भेदभाव खत्म करना और उनके आर्थिक स्थिति को सुधारना।

अन्त्योदय के बाद, दलित विमर्श आंदोलन बहुत सारी अन्य संगठनों और आंदोलनों के माध्यम से अपनी आवाज उठाता रहा। उनमें से कुछ उल्लेखनीय आंदोलन हैं जैसे दलित प्रहरी संघ, दलित पंथ, दलित आत्मसम्मान आंदोलन आदि। ये सभी आंदोलन दलितों के संरक्षण और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ रहे थे। दलित आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य दलितों को उनके समाज में सम्मान प्रदान करना है.

मेरे ज्ञान के अनुसार, "दलित विमर्श" की आखिरी प्रदर्शनी विभिन्न समय और स्थानों पर होती रहती है, इसलिए यह बताना मुश्किल है कि आखिरी दलित विमर्श प्रदर्शन कब और कहां हुआ था।

दलितों के लिए उनके अधिकारों की लड़ाई और संघर्ष अभी भी जारी है और उन्हें अपने समाज में समानता और सम्मान के लिए लड़ते रहना होगा। अनेक दलित आंदोलन और संगठन आज भी दलितों के अधिकारों की रक्षा करते हुए देश भर में सक्रिय हैं।

दलित विमर्श के लोगों ने भारत में अपने अधिकारों के लिए बहुत सारे संघर्ष किए हैं। दलितों को अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ता है क्योंकि वे समाज के निम्न वर्ग में आते हैं और उन्हें बहुत सी समस्याओं से झूझना पड़ता है।

<u>निम्नलिखित कुछ मुख्य मुद्दों का सामना दलित विमर्श करते रहे हैं:</u>

1.काम के लिए अनुचित भुगतान: दलितों को अक्सर काम करने के लिए अनुचित भुगतान मिलता है या फिर उन्हें काम के लिए किसी भी भाग में शामिल होने से रोक दिया जाता है।

2.उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से पीछे छोड़ा जाता है: दलितों को सामाजिक और आर्थिक रूप से पीछे छोड़ दिया जाता है। उन्हें गांव के सभी सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों से बाहर रखा जाता है।

3.उन्हें शिक्षा नहीं मिलती: दलित वर्ग के लोगों को शिक्षा नहीं मिलती है। यह उनकी विकास और प्रगति को रोक देता है।(इसके कई अन्य कारण हैं)...!

दलित विमर्श समाज की मदद करने के लिए, हमें उनके संघ, संगठन या समूह के सदस्य बनने की कोशिश करनी चाहिए। यह समुदाय दलितों के अधिकांश लोगों की समस्याओं को समझता है और उनके लिए समाधान ढूंढने की कोशिश करता है।

दलित विमर्श समाज के सदस्यों से मिलकर उनकी समस्याओं को समझें और उन्हें समाधान के लिए सहायता करें। उनकी आवाज को सुनें और उनकी समस्याओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर हल करने के लिए लोगों को जागरूक करें।

दलित विमर्श समाज के सदस्यों के साथ काम करते हुए, हम उनके अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं और उन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों के बारे में शिक्षा दे सकते हैं। हमें समझना चाहिए कि इन समाजों के सदस्यों को समाधान ढूंढने में समय और सहायता की आवश्यकता होती है। हमें उनके साथ अधिक समय बिताकर उनकी समस्याओं को समझना चाहिए और सहायता करनी चाहिए।

दलित विमर्श पर निष्कर्ष:-

दलित विमर्श पर निष्कर्ष देने के लिए, हमें ध्यान में रखना चाहिए कि यह एक विस्तृत विषय है जिसमें समाज, राजनीति और संस्कृति के कई पहलू होते हैं। हालांकि, दलितों को समाज की भूमिका में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए लगातार लड़ाई जारी है।

भारत में दलित विमर्श की समस्या वर्तमान समय में भी अधिकतर समाज के लिए एक मुख्य मुद्दा है। इस समस्या का समाधान भी एक मात्र उपाय नहीं है, बल्कि समाज, शासन और संस्थाओं के सहयोग से ही संभव है।

दलितों को समाज के साथ मिलकर अधिक उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए, हमें समाज के अंदर दलितों के प्रति जागरूकता फैलानी चाहिए। समाज के सभी वर्गों को दलितों के साथ बराबरी के साथ समझदारी बनानी होगी ताकि समस्याओं का समाधान संभव हो सके।

सरकार और संस्थाएं भी दलितों के संरक्षण और उनके सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए नीतियों का विकास करने में अधिक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

स्रोत:

https://youtu.be/yE3mBBlNaPg

https://youtu.be/0oUOu47KNAs

****